तीव्र पुरुषार्थ - 24

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अब की स्टेज प्रमाण अब होना चाहिए अच्छे से अच्छा। जबकि चैलेन्ज करते हो-4 वर्ष में विनाश की ज्वाला प्रत्यक्ष हो जायेगी; तो स्थापना में भी जरुर बाप की प्रत्यक्षता होगी तब तो कार्य होगा ना। अच्छा! **कमाल यह है जो विस्तार द्वारा बीज को प्रगट करें।** विस्तार में बीज को गुप्त कर देते है। अब तो वृक्ष की अन्तिम स्टेज है ना। मध्य में गुप्त होता है। अन्त तक गुप्त नहीं रह सकता। अति विस्तार के बाद आखरीन वीज ही प्रत्यक्ष होता है ना। (17/05/1972)

➢➢ Variety (झाड) के कुछ दोष ?

➳ _ ➳ एकरसता नहीं है

→ जो आज है, वह कल नहीं होगा

➳ _ ➳ Fluctuations हैं

→ प्रतिपल बदलाव है

- जो सम्बन्ध आज सुख दे रहा है, वह कल भी सुख देगा... ऐसा नहीं है

➳ _ ➳ अविनाशी नहीं है

→ हर सम्बन्ध की शुरुआत और अंत है

➳ _ ➳ Infinity Can Not Be Satisfied By Finite

→ पर आत्मा तो अनंत है... अनंत की प्यास अनंत ही बुझा सकता है

→ कोई भी सांसारिक वैभव आत्मा को समपन्नता का अनुभव नहीं करवा सकता

→ किसी भी तरह का सांसारिक मान आत्मा को तृप्त नहीं कर सकता

➳ _ ➳ Variety Creates Confusion / बेचैनी / उत्तेजना

→ कहीं भी स्थिरता नहीं है

➳ _ ➳ मन अस्थिर रहता है